IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
onal Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 7, Issue 2, July 2021 Impact Factor: 5.731

çk- th- ,l- ?kfj;s dk Hkkjr fo|k'kkL=h; ifjç{;

M,- èkhjæ çlg
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय मानिकपुर, चित्रकूट

lkjk'k%

भारत विद्याशास्त्र का अर्थ है, भारतीय संस्कृति की विशिष्टता के संदर्भ में भारतीय समाज एवं संस्कृति का अध्ययन करना। भारत विद्या शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में भारतीय समाज को समझने हेतु उन ग्रंथों एवं महाकाव्यों की सहायता ली जाती है जिनमें भारतीय समाज का विस्तृत चित्रण किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य के समर्थकों की मान्यता है कि भारतीय सामाजिक संस्थाओं की व्याख्या प्राचीन ग्रंथों द्वारा प्राप्त तथ्यों से ही संभव है। ग्रंथों की प्राचीनता उसकी प्रामाणिकता को बढ़ाती है, यह एक प्रकार से पुस्तकीय परिप्रेक्ष्य है, जिसमें किसी भी प्रकार के क्षेत्र कार्य को अस्वीकृत किया जाता है। केवल उस समाज से संबंधित शास्त्रीय ग्रंथों में संकलित सामग्री को ही विश्लेषण का आधार बिंदु माना जाता है। इसलिए इसे भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के साथ–साथ पुस्तकीय अथवा शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य भी कहा जाता है। पी.एच. प्रभु का हिंदू सामाजिक संगठन पर अध्ययन, के.एम. कपाड़िया का हिंदू नातेदारी का अध्ययन, प्रोफेसर ए.आर. पिल्लई का जाति पर अध्ययन तथा इरावती कर्वे का हिंदू समाज का अध्ययन इस परिप्रेक्ष्य द्वारा हुए अध्ययनों के प्रमुख उदाहरण हैं। जी.एस. घुरिये इस परिप्रेक्ष्य के प्रमुख प्रवर्तक रहे हैं। उन्होंने जाति, वर्ग एवं व्यवसाय, नातेदारी व्यवस्था, भारतीय सभ्यता, मूल्य तथा भारतीय नगरों जैसे विषयों पर अपने अध्ययनों में इस परिप्रेक्ष्य को अपनाया है। हालाँकि घुरिए की रचनाओं में इंडोलॉजी के अतिरिक्त प्रसारवादी तथा परसंस्कृतिग्रहणवादी दृष्टिकोण का भी प्रभाव रहा है। इसके अतिरिक्त राधाकमल मुखर्जी, डी.पी. मुखर्जी, टी.एन. मदान भी भारत विद्या शास्त्र से प्रभावित रहे हैं।

e[;'kCn% .परिप्रेक्ष्य, विद्याशास्त्र, समाजशास्त्र, अध्ययन , घुरिये ।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in